जनवरी-२०२३ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ मासिक

जनवरी-२०२३

सत्यार्थ का जयघोष करता,
नवलखा यह नवलखा।
ऋषि-स्मृति का गान करता,
नवलखा यह नवलखा।
वैदिक ऋचा गुञ्जार करता,
नवलखा यह नवलखा।
भारत बने फिर विश्वगुरु,
पुरुषार्थ करता नवलखा।
प्रत्येक जन हो संस्कारित,
चाहता है नवलखा।
परमेश कर दो यह कृपा,
उद्देश्य पूरा करे नवलखा।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १५

१३५

भारत के सरताज
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
MDH KITCHEN KING
MIXED MASALA POWDER
किचन किंग
MDH CHUNKY CHAT MASALA
MIXED MASALA POWDER
चंकी चाट मसाला
MDH DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
MDH CHANA MASALA
MIXED MASALA POWDER
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२३
पौष कृष्ण प्रथमा
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

January - 2023

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - ११ | अंक -०९ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर — मुद्रण

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

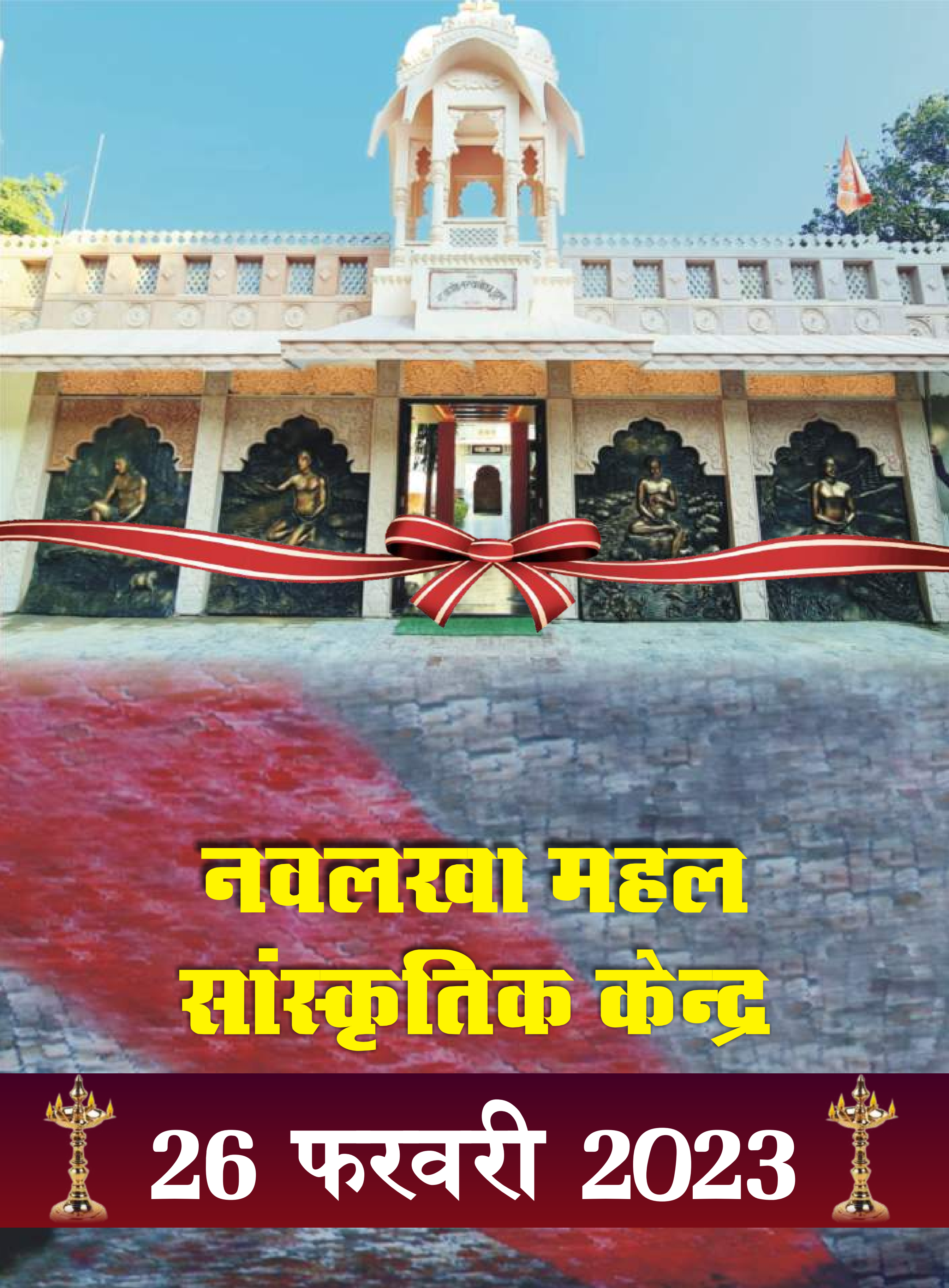
नवलखा महल
सांस्कृतिक केन्द्र
26 फरवरी 2023

नवलखा की यात्रा

१९वीं सदी के महान् विचारक, वेदों के महान् व्याख्याता, धर्मसंशोधक, युगप्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती, मेवाड़ नरेश महाराणा सज्जन सिंह जी के निमंत्रण पर १० अगस्त १८८२ को उदयपुर पधारे और महाराणा जी ने उन्हें अपने अतिथिगृह गुलाबबाग स्थित नवलखा महल में ठहराया। महर्षि दयानन्द लगभग साढ़े छह माह इस भवन में विराजे और उस समय में उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण कार्य, जिनका कि मुख्य उद्देश्य मेवाड़ अधिपति और मेवाड़ की प्रजा को वैदिक संस्कृति की ओर ले जाना था, किए। हिन्दी, संस्कृत, संस्कृति का उन्नयन तथा वेदों की ओर गति करना महर्षिवर का ध्येय था। इस प्रवास काल में महाराणा सज्जन सिंह जी प्रतिदिन श्री महाराज से पढ़ने और आचरण की शिक्षा लेने आते थे। उसका प्रभाव यह हुआ कि महाराणा जी की दिनचर्य्या में, स्वभाव में, आहार-विहार में, आमूलचूल परिवर्त्तन हुआ। महाराणा सज्जन सिंह जी श्री महाराज से इतने प्रभावित थे कि एक प्रकार से उनके शिष्य बनकर उनके निर्देशों पर अक्षरशः चलने का प्रयास उन्होंने प्रारम्भ कर दिया। इस प्रवास काल का सबसे महत्वपूर्ण कार्य ऋषि की कालजयी कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रामाणिक संस्करण का प्रणयन सम्पूर्णन था। श्री महाराज ने यहीं पर रहते हुए अपनी उत्तराधिकारिणी सभा 'श्रीमती परोपकारिणी सभा' का गठन भी किया था, जिसका प्रधान उन्होंने महाराणा सज्जनसिंह जी को बनाया। इस प्रकार यह भवन, इसके रजकण, इसका वायुमण्डल, सुदीर्घकाल तक उस युग के महामनीषी के दिव्य व्यक्तित्व से सम्पृक्त होने के कारण आज भी एक आध्यात्मिक आभा से ओतप्रोत है।

कालान्तर में यह भवन राज्य सरकार के पास आ गया और जब उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश लेखन की शताब्दी का कार्यक्रम भव्य रूप में मनाया गया तब आर्यों की यह प्रबल इच्छा प्रकटीभूत हुई कि यह भवन आर्य समाज को प्राप्त हो। इस हेतु अनेक प्रयास किए गए। सफलता १९९२ में मिली। जो मनीषी व्यक्तित्व इस सफलता का कारक बना उसको यहाँ के संचालन के लिए बनाये गये श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का आजीवन अध्यक्ष बनाया गया। **उन महापुरुष का नाम स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती**

(पूर्व नाम श्री हनुमान प्रसाद चौधरी) था। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन मंत्री पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा और प्रयासों के फलस्वरूप राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री भैरोसिंह जी शेखावत का आर्यों को यह दिव्य अनुदान अविस्मरणीय है।

यह भवन तब अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण हालत में था और क्योंकि यहाँ पर आबकारी विभाग चलता था इस कारण शराब की बोतलों का गोदाम बना हुआ था। ऐसे पवित्र स्थल की यह दशा देखकर स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती ने इसके जीर्णोद्धार का संकल्प लिया और उस दिशा में कार्य करते हुए इसका कायाकल्प कर दिया। यही नहीं यहाँ के पवित्र वातावरण में उनकी वृत्तियाँ इतने उच्च स्तर को प्राप्त हुईं कि वे अपना सबकुछ त्याग कर संन्यास लेकर यहीं निवास करते हुए १९९८ में भव्य यज्ञशाला बनवाकर उसके उद्घाटन के साथ ही चतुर्थ आश्रम में दीक्षित हो गए। **आज यहाँ जो कुछ भी हम देख पाते हैं उसके आधार में स्वामी तत्त्वबोध जी की तपस्या ही दिखायी पड़ती है।**

उदयपुर विश्व प्रसिद्ध आकर्षक पर्यटन स्थल है। लाखों की संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक यहाँ प्रतिवर्ष आते हैं। वे आयें और वैदिक संस्कृति से परिचय प्राप्त करें, इसके लिए **'आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'** का निर्माण किया गया। कोरोना पूर्व काल में बिना किसी विशेष प्रचार के वर्ष में तीस-पैंतीस हजार ऐसे पर्यटक जिनका कि पूर्व में वैदिक विचारधारा से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था, वे आने लगे और फलतः लाखों रुपये का वैदिक साहित्य यहाँ से बिकने लगा। **इसको देखते हुए न्यास ने निश्चय किया कि इस भवन को अत्यन्त आकर्षक और प्रेरक बनाया जाए ताकि लाखों पर्यटकों के साथ विद्यार्थी वर्ग विशेष रूप से लाभान्वित हो सके। इस क्रम में निम्न प्रकल्पों का निर्माण किया गया।**

आकर्षक बाह्य दृश्य- किसी भी संस्थान का बाह्य भाग कैसा है? यह दर्शकों के मन पर बहुत प्रभाव डालता है। नवलखा महल को वास्तव में महल बनाने के लिए इसके बाह्य भाग पर जोधपुर के पत्थर पर नक्काशी करवाकर इसे जहाँ अत्यन्त आकर्षक बनाया है, वहीं पर फायबर रेजिन के **हाई रिलीफ के आर्ट** के द्वारा-

तिब्बत में सृष्टि की उत्पत्ति, नीचे उतर करके आर्यों के द्वारा आर्यावर्त्त की स्थापना (जैसाकि महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है।) **और इसके साथ छह वेद मंत्रों के अर्थों को दृश्यमान स्वरूप में प्रदर्शित किया गया है** जिससे कि वेद में क्या है इसकी एक झलक दर्शक को तुरन्त आसानी से

समझ में आ जाए। यह बिल्कुल नई सोच है जिसका प्रभाव स्पष्ट दिखायी दे रहा है। नवलखा महल के पाँच दरवाजों में से एक को आवागमन हेतु रख शेष चारों में से प्रत्येक पर 'हाई रिलीफ म्यूरल आर्ट में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, इन चार ऋषियों के नयनाभिराम प्रदर्श प्रस्थापित किए गए हैं।' यह सारा बाहर का भाग, सुन्दर उद्यान, ओ३म् तथा विविध रंगों के ध्वजों से सुशोभित होकर सामने से गुजरने वाले पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं।

मधु-हरि प्रेरणा कक्ष

अन्दर प्रवेश करते ही स्वागत कक्ष को भी अत्यन्त सुन्दर व आकर्षक रूप में बनाया है। यहाँ पत्थर पर वृक्षों की Carving अतीव चित्ताकर्षक है। प्रेरणा के लिए इसकी एक भित्ति को पंच महायज्ञों के हाइ रिलीफ म्यूरल आर्ट से सजाया गया है जो दर्शकों को जीवन में प्रतिदिन पंच महायज्ञों के सम्पादन हेतु प्रेरित करता

है। इसके ठीक सामने राष्ट्रोन्नायक वीथिका के रूप में लगभग ७० ऐसे नायकों के चित्र दिए हैं जिन्होंने राष्ट्र को, विभिन्न क्षेत्रों में, अपना योगदान देकर समुन्नत किया है। इसके पीछे भावना यह है कि आज की

पीढ़ी 'सैल्फी' में विश्वास रखती है। जब इस पीढ़ी के सदस्य इस भित्ति के आगे सेल्फी लेंगे तो उनके चित्र के साथ भारत राष्ट्र के गौरवशाली महापुरुषों का अंकन भी हो जायेगा। यह कभी न कभी उनको प्रेरणा दे सकेगा। इसी कक्ष में सुन्दर पिरामिड के रूप में और अन्य प्रकार से भी वैदिक सत् साहित्य का दिग्दर्शन किया गया है जो कि विक्रय के लिए भी उपलब्ध है। **जब पूर्व में ही लाखों रुपयों का साहित्य यहाँ से विक्रय होता था तब अब अनुमान यह है कि इस सुन्दर परिवेश से प्रेरित होकर के पूर्व से कई गुणा अधिक साहित्य बिक सकेगा।** यहाँ न्यास की स्वागतकर्त्री आगन्तुकों का स्वागत करने के लिए तत्पर रहती हुई प्रवेश शुल्क व साहित्य विक्रय को गति देने के लिए समुद्यत है तथा उन्हें अन्य जानकारी भी जो भी दर्शकों को चाहिए वह भी देने में समर्थ है।

आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा- आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद जिन ऋषियों पर प्रकट हुए उनके चित्रों के साथ, वेद विज्ञान

को उद्घाटित करने वाले अनेक ऋषियों के चित्र, उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को प्रकट करने में सक्षम हैं। तत्पश्चात् दो कक्ष भगवान श्री राम और भगवान श्री कृष्ण के उदात्त जीवन की आदर्श झाँकी प्रस्तुत करते हुए भारत के उस गौरवमयी इतिहास को प्रस्तुत करते हैं जिससे प्रेरणा लेकर के कोई भी व्यक्ति न केवल अपने जीवन को बल्कि अन्य लोगों को भी उन्नति के मार्ग की ओर ले जा सकता है।

मेवाड़ दर्शन- यह मेवाड़ वीर प्रसू धरा है। अनेक शूरवीरों में से सर्वाधिक चमकते हुए सितारे महाराणा प्रताप का जीवन किसी के भी जीवन को ऊर्जा से सम्पूरित करने में समर्थ है। इसलिए कुछ चित्र भारत के इस

वीर सैनानी को समर्पित किए गए हैं। **सम्पूर्ण दीर्घा में सभी चित्र ऑयल पेन्टिंग्स हैं प्रिन्टेड नहीं।**

आर्यरत्न दीर्घा- ऋषि दयानन्द के पश्चात् उनके मन्तव्यों को प्रचारित-प्रसारित और पल्लवित करने के लिए अनेकानेक आर्य महापुरुषों ने नाना प्रकार से अपना योगदान दिया। हमारा कर्तव्य है कि उससे भी जन सामान्य को परिचित कराया जाये। इस उद्देश्य से कतिपय आर्य महापुरुषों का जीवन चित्रों सहित प्रस्तुत किया गया है।

वेदार्थ प्रकाशक कक्ष- सभी वेद का नाम तो जानते हैं पर वेद में है क्या? यह नहीं जानते। आवश्यक है कि वेद की दिव्य शिक्षाओं के बारे में आमजन जानें ताकि उनका अनुसरण कर अपने जीवन में आगे बढ़ते हुए अभ्युदय तथा निःश्रेयस की सिद्धि कर सकें। अनुभव में आया है कि मन्त्र तथा उसके अर्थ को पढ़कर भी प्रायः लोग उसका अभिप्राय नहीं समझ पाते अतएव यहाँ दृश्यात्मक रूप से वेदार्थ को प्रस्तुत करने की योजना बनायी गयी है। महल के बाह्य भाग पर तो यह मूर्तरूप ले चुकी है अब आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा के अन्तर्गत एक कक्ष में २० चित्र बनाए जा रहे हैं। **यह प्रयास सर्वाधिक लोकप्रिय होगा, ऐसा विश्वास है।**

सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद- सत्यार्थ प्रकाश का विश्व की पच्चीस भाषाओं में (भारतीय भाषाओं सहित) अनुवाद हो चुका है। यहाँ पर चौबीस भाषाओं के अनुवाद ग्रन्थ से एक-एक पृष्ठ लेकर के उनको घूमने वाले रेक में सजाया गया है ताकि एक ही स्थल पर खड़े हुए व्यक्ति उन चौबीस भाषाओं के सत्यार्थ प्रकाश

को देख सके।

क्रान्ति कक्ष- देश को स्वाधीनता यूं ही प्राप्त नहीं हुई। इसके लिए सहस्रों वीरों ने अपने जीवन की परवाह न

करते हुए मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने शीश अर्पण किए हैं। महाकृतघ्नता होगी यदि उन्हें आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में स्मरण न किया जाए। अतः एक कक्ष में भारत के इन महान् सूपतों को दिग्दर्शित किया गया है। ताकि यहाँ आने वाले विद्यार्थी उस पाठ को भी पढ़ सकें जो उनकी पाठ्य पुस्तकों से नदारद है।

दीन दयाल–सुरेशचन्द्र आर्य संस्कार वीथिका

मनुष्य केवल मनुष्य योनि में जन्म लेने मात्र से मनुष्य नहीं बन जाता। मनुष्यता के योग्य उदात्त गुण उत्पन्न करने के लिए उसे संस्कारों की भट्टी में तपाकर कुन्दन बनाना आवश्यक होता है। ये संस्कार तभी से प्रारम्भ हो जाते हैं जब पति-पत्नी सन्तान उत्पन्न करने की बात सोचते हैं और उसके पश्चात् सम्पूर्ण जीवन सोलह सोपानों पर चढ़ते हुए इस प्रकार का बनाया जा सकता है कि वह अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति करने में समर्थ हो सके। बाल मन पर पवित्र संस्कार पड़ें, उसको उदात्त दिशा में चिन्तन का

अवसर मिले, योग्य धर्मात्मा आचार्य के श्रीचरणों में बैठकर अपने जीवन को नाना प्रकार के गुणों से ज्योतित करने का अवसर मिले, अर्जित हुई क्षमताओं को मानवता के कल्याण हेतु समर्पित करने का मानस बने और आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए अपने जीवन को पूर्णता देने का क्रम बने, **इस हेतु ये सभी संस्कार अत्यन्त आवश्यक हैं।** विडम्बना यह है कि दो तीन संस्कारों को छोड़कर आज सनातन संस्कार परम्परा के वैशिष्ट्य को विस्मृत किया जा चुका है। समाज में जो दिन प्रतिदिन दहला देने वाली भयावह घटनाएँ हमारे सामने आती हैं, उनमें कहीं न कहीं संस्कारों का लोप हो जाना प्रमुख कारण है। माता-पिता और परिवेश से जैसे संस्कार, जैसे विचार मनुष्य को प्राप्त होंगे उसी दिशा में वो कार्य करेगा। **उत्तम संस्कार, उत्तम मनुष्य का निर्माण करते हैं।** अतः फाइबर रेजिन के बने हुए ये मुँह बोलते पुतले मानो सम्पूर्ण संस्कार विधि को अत्यन्त संक्षेप में दर्शकों के समक्ष व्याख्यायित कर देते हैं। **जो भी यहाँ आ रहा है, इस संस्कार वीथिका को देखकर गद्गद हो जाता है।** दृश्य-श्रव्य विधि से इसको यहाँ प्रदर्शित किया गया है।

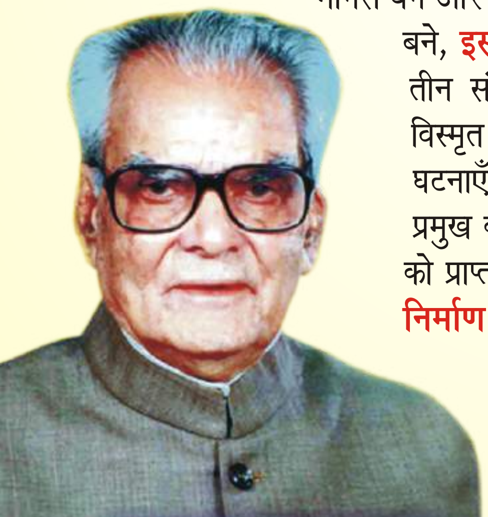

(स्मृतिशेष) राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री
माननीय भैरों सिंह जी शेखावत
जिन्होंने यह पवित्र भवन आर्यों को सौंपा

सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली- सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें मानव जीवन से सम्बन्धित सभी समस्याओं का समाधान मिल

जाता है। अतः जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित ऐसी शिक्षाओं को चित्रात्मक रूप से यहाँ प्रकाशित किया गया है जिसे देख समझकर दर्शक सत्यार्थ प्रकाश के समग्र चिन्तन की झलक यहाँ पा जाते हैं। फलस्वरूप विक्रय केन्द्र से सत्यार्थ प्रकाश क्रय करके ले जाते हैं।

माता निर्माता भवति- **'माता निर्माता भवति'** इस सूत्र का विस्तार महर्षि दयानन्द जी ने अपनी कालजयी कृति सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में करते हुए लिखा है **'मातृमान पितृमान आचार्यवान् पुरुषो वेद'** जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। परन्तु इसमें भी माता का स्थान विशेष है। सन्तान सर्वप्रथम माता के गर्भ में ही आकार

लेती है। माता के जैसा विचार और स्वभाव होता है वह सन्तान को पर्याप्त प्रभावित करता है। इसीलिए माता को निर्माता के रूप में देखते हुए यह कहा गया है कि माता चाहे तो अपने पुत्र या पुत्री को वैसा बना सकती है जैसी कि उसकी अभिलाषा है। माता मदालसा की कथा अत्यधिक प्रसिद्ध है जब उन्होंने अपने पुत्रों का निर्माण करते समय सात्विक विचारों और परिवेश को प्रधानता देते हुए राजसी प्रवृत्ति को बिल्कुल दूर कर दिया था, तब उनके बच्चे भी वैराग्य भाव से ओतप्रोत हुए परन्तु राजा ने जब राजपाट सम्भालने वाले उत्तराधिकारी की बात कही तो उन्होंने उसी प्रकार के क्षात्रधर्म से ओतप्रोत सारे परिवेश का निर्माण करके अलर्क का निर्माण किया। महर्षि दयानन्द जी भी माता के स्थान को सर्वोपरि स्थान देते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं जैसे माता सन्तानों पर प्रेम उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसी भाव को साकार करने के लिए संस्कार वीथिका के अन्तर्गत १० चित्र ऑयल पेंटिंग के बना करके लगाए जा रहे हैं जिसमें माता कौशल्या और श्रीराम, माता यशोदा और श्री कृष्ण, माता अमृताबाई और मूल शंकर, माता मदालसा और अलग माता कुलवन्त वाई और महाराणा प्रताप, माता जीजाबाई और शिवाजी, माता सुभद्रा और अभिमन्यु के चित्रों को लगा कर पर्यटकों को और विशेष रूप से नव युवतियों को यह सन्देश देने का प्रयास किया जा रहा है कि सन्तान के निर्माण में उनका स्थान सर्वोपरि है।

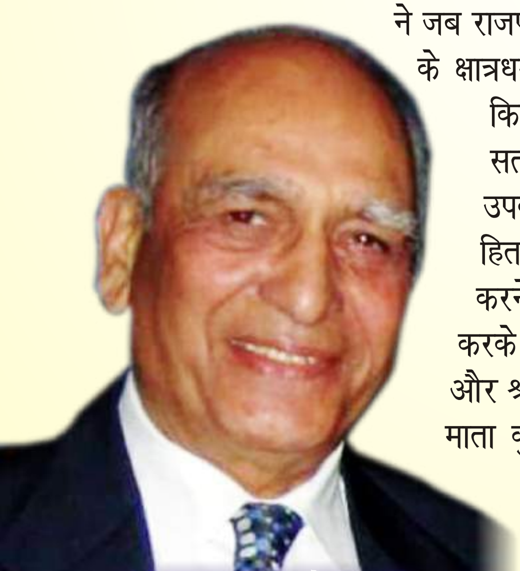

न्यास के संरक्षक तथा सदैव न्यास को गतिशील रखने में सहायक बन आधार स्तम्भ के रूप में सम्बल प्रदान करने वाले मनीषी
माननीय डॉ. सुखदेव चन्द जी सोनी

महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन- छप्पन सुन्दर ऑयल पेन्टिंग्स के द्वारा ऋषिवर के जीवन की प्रमुख घटनाओं को यहाँ दिखाया गया है

जिसके द्वारा दर्शक महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व, उनकी महानता और उनके समग्र क्रान्ति के विचार का अवलोकन कर पाता है।

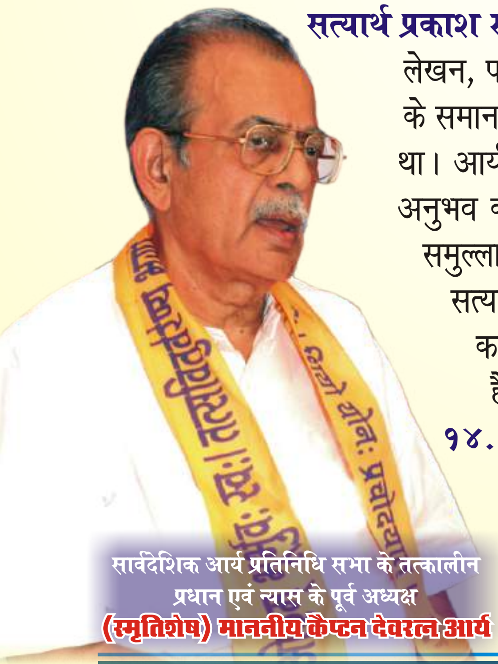

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान एवं न्यास के पूर्व अध्यक्ष
(स्मृतिशेष) माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य

सत्यार्थ प्रकाश रचना कक्ष- यह वह पवित्र कक्ष है जहाँ बैठकर स्वामी जी महाराज लेखन, पठन-पाठन का कार्य किया करते थे और यहीं पर सम्पूर्ण विश्व को सूर्य के समान प्रकाशित ज्ञान को देने वाले अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन हुआ था। आर्यजन इस कक्ष में जाकर रोमांचित होते हुए उन पवित्र स्पन्दनों का अनुभव कर पाते हैं। यहाँ पर काँच के एक घूमते हुए सत्यार्थ प्रकाश के चौदह समुल्लासों के प्रतीक स्वरूप चौदह खण्डीय स्तम्भ का निर्माण किया है जिस पर सत्यार्थ प्रकाश की एक सौ बारह शिक्षाएँ अंकित की गई हैं। कक्ष में प्रवेश करते ही स्वतः घूमना प्रारम्भ होकर, दर्शक को यह स्तम्भ रोमांचित करता है, वहीं इसकी शिक्षाएँ प्रेरणा प्रदान करती हैं।

१४. सत्यार्थमित्र- अब इस भवन पर Recurring खर्च जितना वह होगा उसकी केवल टिकट से पूर्ति सम्भव नहीं है। आर्यजनों ने इसका भार भी अपने कन्धों पर उठा लिया है। वे सत्यार्थमित्र बनकर **मात्र ₹५१०० प्रति वर्ष** का सहयोग दे रहे हैं। यह अल्प राशि भी चमत्कारिक रूप से न्यास की गतिविधियों को आधार प्रदान

केवल एक प्रार्थना– खाली जगह (Blank Space) आप अपनी (उदारता) से भर दें।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

सत्यार्थ मित्र

न्यास द्वारा नवीनतम प्रदर्शन-प्रकारों को अपनाकर, नवलखा महल में अनेक प्रकल्पों का सृजन किया गया है। इन समस्त गतिविधियों को अर्थ-सम्बल प्रदान करने हेतु ...., ... सत्यार्थमित्र के रूप में ₹5100 रुपये वार्षिक का सहयोग प्रदान कर रहे हैं। एतदर्थ सम्मानस्वरूप प्रमाण-पत्र, हार्दिक आभार सहित समर्पित है।

अशोक आर्य	भवानीदास आर्य	नारायण लाल मित्तल
अध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष

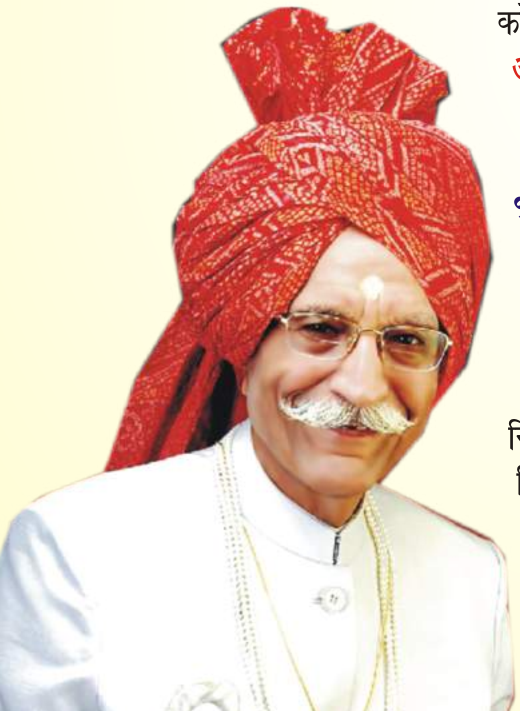

प्रख्यात दानवीर, न्यास के पूर्व अध्यक्ष
पद्म विभूषण
(स्मृतिशेष) माननीय महाशय धर्मपाल जी आर्य

करेगी। **यदि आपको वास्तव में लगता है कि न्यास की परियोजनाएँ आर्य जगत् में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए नवीन द्वार खोल रही हैं, न्यास सकारात्मक दिशा में प्रयासरत है तो केवल इतनी प्रार्थना है कि सत्यार्थमित्र बन सहयोग करें।**

१५. अविद्या/कुरीति निवारण चित्रमाला- ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में ऐसी अनेक कसौटियों का वर्णन किया है जिनकी सहायता से सत्य और असत्य में विभेद किया जा सकता है। लगभग सभी ग्रन्थों में सृष्टिक्रम के विरुद्ध किसी भी तर्क पर खरी न उतरने वाली दन्त कथाओं की भरमार है। उनमें से कुछ का निवारण सचित्र यहाँ इसलिए किया गया है कि दर्शक यह समझ सकें कि जो सामग्री या कथा अथवा प्रसंग उसके समक्ष आती है उनको तर्क के आधार पर ही स्वीकार किया जाए।

१६. भारत गौरव दर्शन- वस्तुतः स्वतन्त्रता प्राप्ति में जितने ज्ञात महापुरुषों के नाम हमें पता होते हैं उससे अनेक गुना ऐसे अज्ञात जीवन हैं जिन्होंने अपने जीवन को भारत माता की बेड़ियाँ काटने के लिए न्यौछावर कर दिया। लेकिन आज विरले ही उनके नाम से परिचित हैं। हम एक बार जब उड़ीसा के वीर बालक बाजा बरुआ के बारे में पढ़ रहे थे, तो उसने जिस प्रकार

अपने जीवन को समर्पित कर दिया, अंग्रेजों की गोलियाँ खाकर मात्र १४ साल की उम्र में जीवन उत्सर्ग का जो उदाहरण प्रस्तुत किया वह अलौकिक है। **इसने हमें संकल्पित होने के लिए बाध्य कर दिया कि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र में एक टेलीविजन पर ऐसे ही क्रान्तिवीरों को हम प्रस्तुत करें ताकि उनका उत्सर्ग दर्शकों के समक्ष आ सके। भारत गौरव दर्शन के रूप में यह भी नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का एक अभिन्न अंग है और ३६५ दिनों में ऐसे ३६५ क्रान्तिवीरों को दिखाने का उद्योग किया जा रहा है।**

सुरेशचन्द्र–दीनदयाल आर्य चलचित्रालय

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर (NMCC) में चौंतीस सीटों की क्षमता वाले एक अत्यन्त सुन्दर, महापुरुषों के चित्रों से सुसज्जित, चल चित्रालय (थ्री डी) थियेटर का निर्माण किया गया है। जिसमें अत्यन्त उच्च क्वालिटी के प्रोजेक्टर व साउन्ड सिस्टम लगाये गये हैं । वर्तमान में दर्शकों को महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, सम्राट् पृथ्वीराज चौहान और भारत की आजादी से सम्बन्धित लघु चलचित्र दिखाये जा रहे हैं। नवलखा महल के दर्शनार्थ अपने शिक्षकों के सहित विद्यार्थीगण पचास से लेकर सौ से भी ऊपर की संख्या में शैक्षणिक गतिविधि के अंग स्वरूप यहाँ आते हैं और वे भाव विभोर हो जाते हैं। इन सब चलचित्रों के माध्यम से एक प्रकार से विद्यार्थियों को वो सब कुछ दिया जा रहा है जिसे जानना, जिनके माध्यम से अपनी जड़ों को पहचानना, उनके लिए अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु वह उन्हें उनके विद्यालय में नहीं मिल रहा। इसीलिए इसे वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था के रूप में भी देखा जा सकता है। न्यास द्वारा महर्षि दयानन्द के ऊपर, विशेष रूप से उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं को दर्शाते हुए एक डॉक्यूमेन्ट्री का निर्माण किया गया है जिसे सामान्य दर्शकों ने ही नहीं आर्य विद्वानों ने भी सराहा है और कहा है कि इसको देखने से एक बार में ही सहज रूप से महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन चरित्र हृदय में उतर जाता है।

प्रवेश शुल्क की बात करें तो आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा के निर्माण के साथ ही यह अनुभव किया जा रहा था कि निशुल्क प्रवेश की व्यवस्था पर्यटकों को आकर्षित नहीं कर रही थी तो आज से लगभग ७ वर्ष पूर्व ₹१०

का टिकट लगाया गया और जो टिकट छपाई गई मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और योगीराज कृष्ण के अतिरिक्त गायत्री मंत्र और ओ३म् के अंकन सहित। **यह टिकट इतनी सुन्दर और प्रेरक बनाई गई है कि आज तक एक भी पर्यटक उसको फेंक कर नहीं गया वरन् अपनी जेब में रख कर के ले गया,** जो उसे इस पवित्र स्थल की याद दिलाती रहेगी। सामान्य तौर पर तो दर्शक पर्यटन स्थलों की टिकटें वहीं फैंक जाते हैं। इस टिकट के लगने के बाद ज्यादा दर्शक आने लगे।

अब क्योंकि आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा के बाद दीनदयाल सुरेशचन्द्र आर्य संस्कार वीथिका, सुरेशचन्द्र दीनदयाल आर्य चल चित्रालय, मधु-हरि प्रेरणा कक्ष आदि नवीन प्रकल्पों का निर्माण हो चुका है और इनमें दैनिन्दिन रूप से विद्युत् आदि के क्रम में काफी खर्च भी होता है इसलिए न्यास ने निर्णय किया है कि **१ जनवरी २०२३ से**

टिकट ₹३० कर दी जाएगी। विद्यार्थियों के लिए यह राशि ₹२० और विदेशियों के लिए ₹१५० होगी। आशा हम यही करते हैं कि दर्शक इस राशि को अधिक नहीं समझेंगे और जब वह इस सराहनीय केन्द्र को देख कर जाएँगे तो उन्हें बिल्कुल भी नहीं लगेगा कि हमने कोई ज्यादा राशि दी है। स्मरण रखें कि दो गाईड दर्शकों का मार्गदर्शन करते हुए श्रेष्ठतम तरीके से उन्हें सब समझाते हैं। यह सेवा पूर्णतः निःशुल्क है।

इस प्रकार स्थान की जितनी उपलब्धता थी, आर्थिक सहयोग जितना प्राप्त हो सका, उसके अनुसार इस सांस्कृतिक केन्द्र का निर्माण किया गया है। अभी और परियोजनाएँ मस्तिष्क में हैं साधन जुटने पर उन पर कार्य सम्भव होगा। यहाँ सैंकड़ों लोग प्रतिदिन आकर वैदिक संस्कृति की भव्यता एवं यथार्थता को देखकर गद्गद हो रहे हैं। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आने वाले कुछ वर्षों में विश्व के कोने-कोने से सुधिजन वैदिक संस्कृति के इस मूर्तिमान भव्य केन्द्र के दर्शन करने हेतु लाखों की संख्या में यहाँ आयेंगे। यह कोरी कल्पना नहीं यथार्थ है और आने वाले एक दो वर्षों में साकार होने वाला है। आवश्यकता केवल और केवल आपके स्नेह, आत्मीयता एवं आपके सहयोग की है जो कि हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि हमें भरपूर प्राप्त हो रहा है।

दीनदयाल-सुरेशचन्द्र आर्य संस्कार वीथिका परिसर

गर्भाधान संस्कार

पुंसवन संस्कार

सीमन्तोन्नयन संस्कार

जातकर्म संस्कार

नामकरण संस्कार

निष्क्रमण संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार

चूडाकर्म संस्कार

कर्णवेध संस्कार

उपनयन संस्कार

वेदारम्भ संस्कार

समावर्तन संस्कार

विवाह संस्कार

वानप्रस्थ संस्कार

संन्यास संस्कार

अन्त्येष्टि संस्कार

गर्भाद्या मृत्युपर्य्यन्ताः संस्काराः षोडशैव हि। वक्ष्यन्ते तं नमस्कृत्यानन्तविद्यं परमेश्वर।।

दीनदयाल-सुरेशचन्द्र आर्य संस्कार वीथिका परिसर

गर्भाधान संस्कार

सुसन्तान प्राप्ति हेतु गर्भाधान से पूर्व, दौरान एवं पश्चात् ध्यान रखने योग्य निर्देश

पुंसवन संस्कार

गर्भस्थ शिशु का शारीरिक विकास और पुष्टि जिस प्रकार सर्वोत्तम हो सके उन उपायों का निर्देश

सीमन्तोन्नयन संस्कार

गर्भस्थ शिशु के मस्तिष्क की वृद्धि और उसकी प्रखरता का विज्ञान

जातकर्म संस्कार

बच्चे के जन्म लेने पर उसकी सर्वतोमुखी उन्नति दृढ़ शरीर और प्रखर बुद्धि, ओ३म् का जीवन भर स्मरण और अध्यात्म से सदा निकटता

नामकरण संस्कार

सम्बोधन हेतु सुन्दर सार्थक व प्रेरक नाम

निष्क्रमण संस्कार

घर से निकाल शिशु का प्रकृति से परिचय, सूर्य दर्शन और चन्द्र दर्शन, प्रभु से कल्याण की प्रार्थना

अन्नप्राशन संस्कार

जब बालक बड़ा होता है तो केवल दूध से काम नही चलता। उसे अन्न देना आवश्यक है। यह अन्न स्वास्थ्यवर्द्धक, बालक की सर्वांगीन विकास के लिए आवश्यक और हिंसा रहित होना चाहिए।

चूडाकर्म संस्कार

गर्भस्थ मलिन बालों को हटाना

कर्णवेध संस्कार

अनेक प्रकार की बीमारियों से बचने के लिए कान की लौ में एक विशिष्ट स्थान पर छेद

उपनयन संस्कार

आगे की शिक्षा के लिए बालक और बालिका दोनों को गुरु के पास भेजने के लिए उनका यज्ञोपवीत संस्कार

वेदारम्भ संस्कार

बालिक-बालिका का अपने अपने गुरुकुल में प्रवेश

समावर्तन संस्कार

गुरुकुल में शिक्षा पूर्ण करने पर गुरु के उपदेश के साथ गृहस्थ में प्रवेश करने के लिए प्रस्थान

विवाह संस्कार

सुख, सौभाग्य और सन्तान के निर्माण हेतु गृहस्थ आश्रम में प्रवेश

वानप्रस्थ संस्कार

बाल श्वेत होने और गृहस्थ आश्रम के दायित्व से निवृत्ति गृहस्थ का त्याग

संन्यास संस्कार

तीनों ऐषणाओं को त्याग, ममत्व के बन्धनों से मुक्त होकर परमात्म प्राप्ति और संसार के कल्याण के लिए विचरण

अन्त्येष्टि संस्कार

प्रभु का अटल विधान, इस नश्वर शरीर की अन्तिम गति भस्म कर देना, पर्यावरण प्रदूषण न हो इसका ध्यान रखना।

प्रक्षेप की हानियाँ

भारतीय प्राचीन ग्रन्थों के सन्दर्भ में आज स्थिति क्या है? यह माना जाता है कि इनमें जो कुछ भी लिखा है वह सब सत्य है। ऐसा मानने के कारण भारतीय संस्कृति के अध्येता अनेक बार विचित्र स्थिति में फंस जाते हैं। क्योंकि उन ग्रन्थों में सृष्टिक्रम से विरुद्ध असम्भव घटनाक्रम मिलते हैं, आपस में एक दूसरे से विरुद्ध Contradictory बातें मिलती हैं अथवा जिन भारतीय महापुरुषों पर गर्व किया जाता है उनके सन्दर्भ में हीन बातें मिलती हैं।

हम एक बार एक यूट्यूब चैनल देख रहे थे। उसमें एक व्यक्ति सामने बैठे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रेमी व्यक्ति को श्रीराम के बारे में यह चुनौती दे रहा था कि वह श्रीराम के बारे में एक भी अच्छाई बताए। स्पष्ट है कि सामने वाला हक्का बक्का था कि अच्छाईयों के साक्षत् रूप जिनके बारे में कहा है कि- **'रामो विग्रहवान धर्मः'**

अर्थात् राम धर्म के साक्षत् रूप हैं, उनके बारे में यह व्यक्ति क्या बकवास कर रहा था। पर वह व्यक्ति अपनी बात को बल देने के लिए वाल्मीकि रामायण आदि ग्रन्थों से ही ऐसी-ऐसी बातें दिखा रहा था जो कि निश्चित तौर पर श्रीराम के चरित्र पर अंगुली उठाती थीं। इन भक्त महोदय की हालत दर्शनीय थी। बेचारा कुछ भी नहीं कह पा रहा था क्योंकि साफ लिखा हुआ दिख रहा था। यहाँ पर स्थिति क्या है? **वास्तविकता यह है कि रामायण और ऐसे ही अन्य ग्रन्थों में मूल ग्रन्थ लिखे जाने के पश्चात् अनेकों स्वार्थी लोगों ने अनेक प्रकार की बातें तथा मिथ्या प्रकरण मिला दिए जिन्हें हम अगर आज भी हटा दें तो फिर किसी की हिम्मत नहीं हो सकती कि वह हमारे महापुरुषों का चरित्र हनन कर सके।** परन्तु ऐसा हम करने को तैयार नहीं हैं। कोई सुझाव देता है तो उसी को दुश्मन मान लेते हैं। सच्चाई यह है कि अगर हम तैयार नहीं है तो फिर हमें सहन

भी करना होगा। और लोकोत्तर आदर्श के प्रतिपादक महापुरुषों के बारे सर्वथा मिथ्या दोषारोपणों पर मौन साधना होगा।

परन्तु यदि उस भारत की चर्चा करें जिसके विद्वानों के चरणों में बैठकर के चरित्र की शिक्षा प्राप्त करने के लिए दुनियाभर से लोग आते थे तो फिर ऐसे प्रकरणों का समाधान तो ढूँढ़ना ही पड़ेगा जो निष्कलंक महापुरुषों के चरित्र पर मिथ्या आरोप हैं। **समाधान केवल यही है कि इन स्थलों को प्रक्षिप्त घोषित करें।** यह भी कह दें कि ये प्रक्षिप्त स्थल चिह्नित किए जा सकते हैं। रामायण जैसा ग्रन्थ श्रीराम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम के जीवन की गाथा है जिनके जीवन में बिन्दु मात्र भी दोष नहीं मिलता और इस गाथा का प्रणयन काव्य रूप में वाल्मीकि जैसे महर्षि की कलम से हुआ है। इतना सब कुछ होने पर भी अगर इसमें ऐसे प्रकरण मिलते हैं कि किसी व्यक्ति का वध राम केवल इस कारण से कर देते हैं कि वह तथाकथित रूप से जाति से शूद्र था अथवा अपनी पत्नी को केवल एक प्रजाजन के कहने से बिना किसी सबूत के लोकापवाद से बचने के लिए परित्याग कर देते हैं तो इनका उत्तर एक ही है कि यह सब उत्तरकाण्ड में वर्णित घटनाएँ हैं और केवल हम ही नहीं, आर्य समाज के विद्वान् ही नहीं विश्वभर के रामायण के विद्वान् उत्तरकाण्ड को पूर्णतः प्रक्षिप्त मानते हैं। इस बात को स्वीकार करने से अनेक समस्याओं का समाधान हो जाता है। श्रीराम के चरित्र के ऊपर लगे अनेक आपत्तिजनक आक्षेपों का निराकरण हो जाता है। हमारी दृष्टि में तो श्रीराम और श्रीकृष्ण की सबसे बड़ी पूजा यही है कि सुधिजन प्रमाण और तर्क के साथ ऐसे स्थलों को प्रक्षिप्त घोषित करें। परन्तु हम हैं कि मानते ही नहीं। प्रक्षेप इन सभी ग्रन्थों में हुए हैं इसे माने बिना हम अपनी संस्कृति के सही स्वरूप को विश्व पटल पर नहीं रख सकते।

"राजा भोज के राज्य में व्यास जी के नाम से मार्कण्डेय और शिवपुराण किसी ने बना कर खड़ा किया था। उसका समाचार राजा भोज को होने से उन पण्डितों को हस्तच्छेदनादि दण्ड दिया और उन से कहा कि जो कोई काव्यादि ग्रन्थ बनावे तो अपने नाम से बनावे। ऋषि मुनियों के नाम से नहीं।"

प्रक्षेप का सिद्धान्त महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्भवतः विगत कई सदियों में प्रथम बार दिया। उन्होंने यह बात अत्यन्त बलपूर्वक कही कि ग्रन्थ चाहे संस्कृत में ही क्यों ना हों, वे संस्कृत में होने मात्र से ही सम्पूर्ण सत्य नहीं हो जाते। बीच के कालखण्ड में अनेक कारणों से स्वार्थवश, अथवा अपनी बात को बड़े-बड़े ऋषियों की कलम से निकला बताने की लालसा में कुत्सित मानसिकता वाले लोगों ने ऐसा किया।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में नकली ग्रन्थ बनाने की प्रवृत्ति पर लिखते हैं-

'राजा भोज के राज्य में व्यास जी के नाम से मार्कण्डेय और शिवपुराण किसी ने बना कर खड़ा किया था। उसका समाचार राजा भोज को होने से उन पण्डितों को हस्तच्छेदनादि दण्ड दिया और उन से कहा कि **जो कोई काव्यादि ग्रन्थ बनावे तो अपने नाम से बनावे। ऋषि मुनियों के नाम से नहीं।** यह बात राजा भोज के बनाये संजीवनी नामक इतिहास में लिखी है कि जो ग्वालियर के राज्य 'भिण्ड' नामक नगर के तिवाड़ी ब्राह्मणों के घर में है। जिस को लखुना के रावसाहब और उन के गुमाश्ते रामदयाल चौबे जी ने अपनी आँखों से देखा है। उस में स्पष्ट लिखा है कि व्यास जी ने चार सहस्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पाँच सहस्र छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात् सब दश सहस्र श्लोकों के प्रमाण भारत बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिता जी के समय में पच्चीस और मेरी आधी उमर में तीस सहस्र

श्लोकयुक्त महाभारत का पुस्तक मिलता है। जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊँट का बोझा हो जायेगा और ऋषि मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेंगे तो आर्यावर्त्तीय लोग भ्रमजाल में पड़ वैदिक धर्मविहीन होके भ्रष्ट हो जायेंगे।' (सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ११)

जो लोग पुराणों को महर्षि व्यासकृत कहते हैं उस सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द आगे इसी समुल्लास में लिखते हैं– 'जो अठारह पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो उन में इतने गपोड़े न होते। क्योंकि शारीरक सूत्रों, योगशास्त्र के भाष्य आदि व्यासोक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यास जी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते। और इस से यह सिद्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ बनाये हैं उन में व्यास जी के गुणों का लेश भी नहीं था। और वेदशास्त्र

विरुद्ध असत्यवाद लिखना व्यास जी सदृश विद्वानों का काम नहीं किन्तु यह काम वेदशास्त्र विरोधी, स्वार्थी, अविद्वान् लोगों का है।'

अभी तथाकथित एक प्रोफेसर ने अपनी कक्षा में रामायण को उद्धृत करते हुए कहा कि जब श्री राम ने युद्ध जीत लिया तो उन्होंने माता सीता को कहा कि उन्होंने यह युद्ध सीता के लिए नहीं जीता वरन् अपने कुल की शान बचाने के लिए जीता है और रही सीता की बात तो वह सेवन करने के लिए उतनी ही अयोग्य हैं जैसे कि किसी कुत्ते के द्वारा चाटा गया घी।

इतनी घटिया बात उसने कह दी सब ने सुन ली चाय के प्याले में भी उफान नहीं आया। जिन श्रीराम को मुक्त कण्ठ से मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया क्या वे कभी सीता के बारे में ऐसा कह सकते हैं? कदापि नहीं। वाल्मीकि

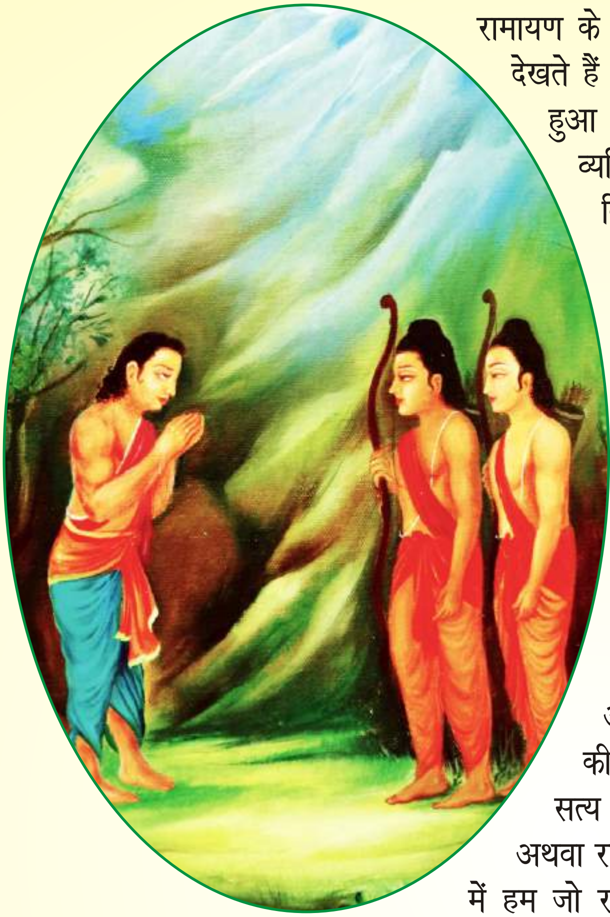

रामायण के युद्ध काण्ड के अन्त के सर्गों को जब उठा करके देखते हैं तो ऐसा कोई भी वाक्य श्रीराम के मुख से निकला हुआ वहाँ नहीं दिखाई देता। जब बात कुछ बढ़ी तो इस व्यक्ति ने एक चैनल पर जाकर यह साबित करने के लिए कि उसने जो कुछ कहा वह पुस्तकों में लिखा हुआ है महाभारत का दृष्टान्त दिखाया जहाँ कोई मार्कण्डेय ऋषि युधिष्ठिर को यह बात बताते हैं। श्रीराम के जीवन के बारे में वाल्मीकि ऋषि की तुलना में महाभारत का कोई वर्णन प्रामाणिक नहीं हो सकता और फिर जैसा कि ऊपर हमने देखा कि महाभारत में भी मिलावट के सागर हैं तो उसकी बात प्रामाणिक हो ही ऐसा कैसे माना जा सकता है? किसी भी पुस्तक को लेकर के हम किसी महापुरुष के बारे में कोई बात कह दें यह बात अलग है परन्तु वह प्रामाणिक ही हो ऐसा नहीं है। अन्यथा तो सैकड़ों रामायण हैं, जिनमें नाना प्रकार की बातें लिखी हुई हैं क्या वह सत्य है? और हम तो सत्य उसे भी मान लेते हैं जो हमने या तो टेलीविजन पर अथवा रामलीला में देखा हो जबकि वह सत्य नहीं है। बचपन में हम जो रामलीला देखा करते थे उसमें एक दृश्य आता था जिसके अनुसार जनक की सभा में सीता स्वयंवर के समय श्रीराम व अन्य राजकुमारों के अतिरिक्त स्वयं रावण भी विवाह के लिए आता है। तो डर यह पैदा हो जाता है कि रावण तो धनुष भंग कर ही देगा। परन्तु उस समय आकाशवाणी होती है कि 'रावण तेरी लंका में आग लग गई है' और इस कारण रावण वहाँ से चला जाता है। यह वर्णन कतई रामायण में है ही नहीं परन्तु इसे बताया जाता है और सच भी मान लिया जाता है। जब यह स्पष्ट प्रक्षिप्त सामने हैं तो अन्य ऐसे ही प्रक्षिप्त स्थलों से कैसे इंकार किया जा सकता है?

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त सैकड़ों रामायण देश-विदेश में अनेक लेखकों द्वारा लिखी गईं जिनमें मुख्य कथानक के अतिरिक्त लेखक के द्वारा विशेष या सामान्य अभिप्राय से अनेक ऐसी बातें लिख दीं जो कि मूल वाल्मीकि रामायण में नहीं हैं यहाँ पर जिन आईएएस के कोच साहब का जिक्र किया गया है उन्होंने भी श्रीराम द्वारा भगवती सीता को अपमानित करने के लिए जिन वाक्यों का प्रयोग किया है वे भी महाभारत के किसी प्रकरण से लिए हैं वाल्मीकि रामायण में वे वाक्य नहीं हैं तो फिर उन वाक्यों का चयन और उनको बच्चों को पढ़ाना अनुचित ही नहीं अपराध है। इन अन्य रामायणों में आपस में भेद हैं। इसे एक उदाहरण से हम समझ सकते हैं। बाली वध के प्रसंग में वाल्मीकि रामायण का जो प्रसंग है वह लगभग सर्वविदित है कि सुग्रीव श्रीराम के कहने से दो बार बाली से लड़ने जाता है पहली बार पिटकर जब आ जाता है तो श्रीराम कहते हैं कि दोनों में फर्क पता नहीं चला इसलिए उन्होंने वाण नहीं चलाया। दूसरी बार माला पहनाकर के भेजते हैं और बाली का वध करते हैं। मरने से पूर्व घायल बाली कुछ प्रश्न श्रीराम से करता है जिसमें एक तो अपना अपराध पूछता है

और श्रीराम द्वारा उसके वध के अधिकार पर प्रश्नचिह्न लगाता है। और उसके बाद यह भी कहता है कि जब वह दूसरे के साथ युद्ध में उलझा हुआ था तब क्योंकर उनके जैसे महान् व्यक्ति ने उनका वध करने का उद्योग किया। हम यहाँ यह लिखना उचित समझते हैं कि विद्वानों के अनुसार इस प्रकरण में दो सर्ग प्रक्षिप्त हैं।

अब इसी प्रकरण को देखें तो अन्य रामायणों में अपने-अपने प्रकार से लिखा-

नृसिंह पुराण में सुग्रीव बाली के **एक ही द्वन्द्व का वर्णन है,** अगर तिब्बती और खोतानी रामायणों की बात करें तो वहाँ पर द्वन्द युद्ध के लिए **सुग्रीव की पूँछ में एक दर्पण बाँध दिया जाता है।** रामकियेन में राम अपने **वस्त्र का किनारा सुग्रीव की कमर में लपेटते हैं।**

गुणभद्र जी ने उत्तर पुराण लिखा है। जिसमें युद्ध का कारण ही अलग है। राम ने बाली का महावीर नामक हाथी माँगा, बाली ने उसे देना अस्वीकार कर दिया जिस पर युद्ध हुआ और अन्त में राम ने नहीं लक्ष्मण ने एक तीक्ष्ण वार से बाली का सर काट दिया। एक ही प्रसंग में इतने भेद? और देखें-

उदाहरण के लिए हम यहाँ तमिल के प्रसिद्ध महाकवि कम्बन द्वारा लिखी गई कम्ब रामायण के नाम से प्रसिद्ध रामायण का उल्लेख करते हैं जिसमें लक्ष्मण ने बाली को यह तर्क दिया कि राम ने सुग्रीव को शरणागत के रूप में स्वीकार किया था और वचन भी दिया था कि वह तुम्हारा वध करेंगे। यदि वह सामने आते तो तुम भी उनके पाँव पकड़कर शरण की प्रार्थना करते। मेरे भाई का व्रत है कि वह शरणार्थियों को अभय दान दें। अतः सुग्रीव को दिए हुए वचन की रक्षा के लिए वह छुपकर तुम पर तीर चलाने को विवश हुए। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि महर्षि कम्बन राम ने जो छुपकर तीर चला कर बाली को मारा उसको उचित ठहराने के लिए अथवा उस दोष के परिहार के लिए एक तर्क प्रस्तुत कर रहे हैं इसलिए यह प्रकरण वाल्मीकि रामायण से अलग हो जाता है। वाल्मीकि रामायण में ऐसा कुछ नहीं है। परन्तु यह प्रक्षेप अथवा भिन्न प्रकार से कही गई बात यह बताती है कि इसी प्रकार से विभिन्न रामायणों में अनेक प्रकरणों को उन-उन लेखकों द्वारा समाहित कर दिया गया है। एक ही प्रसंग में इतने विचलन प्रक्षेप सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

यही स्थिति भगवान श्री कृष्ण के जीवन चरित्र की है। इनके पावन जीवन चरित्र में तो इस प्रकार के प्रक्षेप किए गए हैं **जिससे योगी श्री कृष्ण दुनिया को भोगी श्री कृष्ण के रूप में नजर आते हैं** और इसीलिए सनातन विरोधी लोग उन प्रकरणों को प्रकाशित करते रहते हैं। जिन भगवान श्री कृष्ण ने गाली देते हुए शिशुपाल को लक्ष्मण रेखा पार कर जाने पर मृत्युदण्ड दिया था, सोचिए अगर वह आज होते तो उनके जीवन चरित्र को जिस प्रकार से अश्लील प्रकरणों से भर दिया गया है श्री कृष्ण उनके साथ क्या करते? विडम्बना यह

है कि ऐसे लोग न तो इन प्रकरणों को दूर करना चाहते हैं बल्कि इसी में प्रसन्न होकर बार-बार इन स्थलों को बिना किसी संकोच के प्रकाशित करते हैं। क्या आप ब्रह्मवैवर्त पुराण वर्णित प्रकरणों को परिवार के सदस्यों के मध्य बैठकर पढ़ने का साहस कर सकते हैं? कदापि नहीं। आप भले ही ऐसे प्रकरणों की आध्यात्मिक व्याख्या करते रहें परन्तु दुनिया उनको जैसे ये हैं उसी रूप में अश्लील प्रकरणों के रूप में ही देखती है और इसीलिए विधर्मी श्री कृष्ण पर अनेकानेक आरोप लगाते हैं। इसी प्रकार भगवान श्री कृष्ण के जीवन को अलौकिक सिद्ध करने के लिए, उन्हें अवतार सिद्ध करने के लिए अनेक प्रकरणों को प्रक्षिप्त किया गया है। उदाहरण के लिए श्री कृष्ण का जन्म कंस की जेल में बताया गया और जब उनका जन्म हुआ तो जेल के ताले टूट गए इत्यादि-इत्यादि। परन्तु हरिवंश पुराण (जो महाभारत का खिल भाग माना जाता है) को ही पढ़कर हम देखें तो वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है। वहाँ तो स्पष्ट वर्णित है कि देवकी को उनके अर्थात् वासुदेव जी के घर में ही नजरबन्द किया गया था और दासियों को उनकी गर्भावस्था पर पूर्ण निगाह रखने, यथा समय कंस को सूचना देने की बात कही गई है।

देवकी च गृहे गुप्ता प्रच्छन्नैरभिरक्षिता।
स्वैरं चरतु विश्रब्धा गर्भकाले तु रक्ष्यताम्॥ – श्रीहरिवंश पुराण, विष्णुपर्व २/३

अर्थ– देवकी अपने भवन में गुप्त रक्षकों द्वारा सुरक्षित रहकर अपनी इच्छा के अनुसार निर्भय विचरे; परन्तु जब वह गर्भवती हो जाय, उस समय उसे विशेष नियन्त्रण में रखना चाहिए।

पुराणों को मानने वाले ही इस प्रकरण पर ध्यान नहीं देंगे। इसी प्रकार एक अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाने के

रहस्य को सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया। श्रीकृष्ण की नेतृत्व क्षमता यहाँ इस प्रकरण में जो प्रस्तुत हुई है उस ओर ध्यान न देकर एक अंगुली पर पर्वत उठा लेना सिद्ध करते हुए उनको अलौकिक शक्तियों का स्वामी घोषित करते हुए अवतार की श्रेणी में लाने की लालसा ही प्रकट होती है।

प्राविशन्त ततो गावो गोपैर्यूथप्रकल्पिताः।
तस्य शैलस्य विपुलं प्रदरं गह्वरोदरम्।। – श्रीहरिवंश पुराण, विष्णुपर्व १८/५६

अर्थ– तदनन्तर गोपों द्वारा एक-एक यूथ के रूप में विभक्त की हुई गौएँ उस पर्वत की विशाल गुफा में, जिसका भीतरी भाग बहुत बड़ा था, प्रवेश करने लगीं।

इससे श्री कृष्ण जी महाराज के जीवन को कोई महत्व प्राप्त नहीं होता परन्तु उनके जीवन को किंवदन्ती के रूप में ही सम्मिलित कर दिया जाता है। यह अत्यन्त घाटे का सौदा है भारतीय संस्कृति के लिए। इसी प्रकार से कालिया नाग के मर्दन का प्रसंग है। यहाँ पर स्पष्ट वर्णन आता है कि कालिया नाग की पत्नियाँ जिनके बाल बिखरे हुए थे, भय से शृंगार अस्त व्यस्त हो गया था, वह श्री कृष्ण के चरणों में क्षमा कर देने की गुहार लगाती हैं। क्या यह सर्पों का वर्णन है?

तो भगवान श्री कृष्ण के पावन स्वरूप को दिग्दर्शित करने के लिए और ऐसे ही अतिशयों की वास्तविकता दिखाने के लिए आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा के एक कक्ष में अनेक चित्रों के माध्यम से दिखाया गया है। एक बात और हमें अत्यन्त संतोष के साथ आप लोगों से कहनी है कि ९९ प्रतिशत लोग जो यहाँ देखने आते हैं और जिनका आर्य समाज से भी कोई पूर्व का सम्बन्ध नहीं है **वे तर्कपूर्ण इन समाधानों को बड़ी सहजता से स्वीकार करते हुए नजर आते हैं।** अहिल्या पत्थर नहीं थीं एकान्त में तपस्या करते हुए पत्थर जैसी हो गई थीं, हनुमान वेद वेदांग के महान् पण्डित थे, रामायण काल में प्रत्येक जनप्रतिनिधि अग्निहोत्र करता था और इसके प्रतिनिधि स्वरूप माता कौशल्या के अग्निहोत्र करने का वर्णन दर्शकों को सन्तुष्ट करता है और भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल अध्याय को प्रस्तुत करता है और यही हमारा अभिप्राय है।

जब हम इन बातों का प्रवचन में वर्णन करते थे तो लोगों को यह खण्डन लगता था परन्तु इसके विपरीत दृश्यात्मक रूप से श्री हनुमान जी को संध्या करते हुए जब दिखाया जाता है और यह कहा जाता है कि वे आर्य संस्कृति के प्रमुख स्तम्भ थे और चीं चीं करने वाले बन्दर नहीं थे तो लोग इसे तर्कपूर्ण मानते हुए स्वीकार कर रहे हैं। अन्त में निवेदन यही है कि अगर हमें अपनी संस्कृति के गौरव को अक्षुण्ण रखना है तो प्रक्षेपों को चिह्नित करते हुए उन्हें सदा-सर्वदा के लिए विदा करना ही होगा तभी हमारी नई पीढ़ी के समक्ष वह सत्य प्रकट हो सकेगा जिस पर वे गौरव कर सकेंगे। आर्यवर्त्त चित्रदीर्घा के माध्यम से NMCC एक महत्वपूर्ण प्रयास कर रहा है इसमें आप सभी का सहयोग सदैव-सदैव के लिए आमन्त्रित हैं।

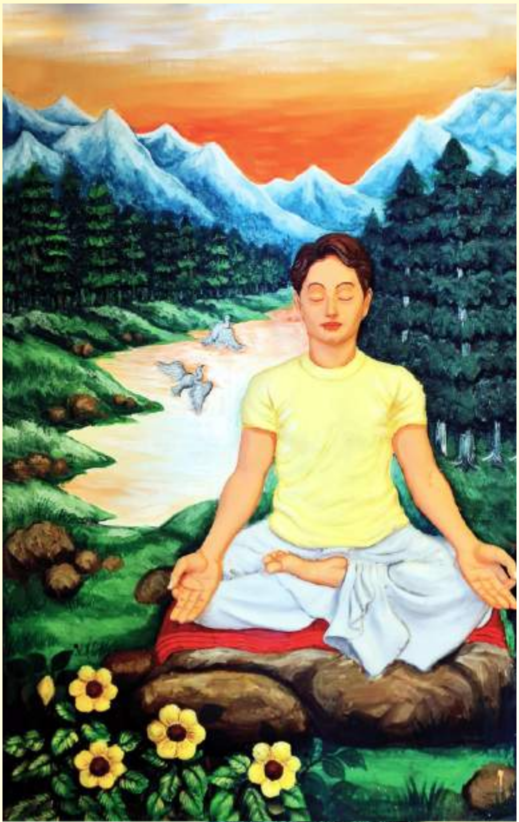

नित्य करें इन कर्मों को सम्पूर्ण सुख शान्ति हेतु

ब्रह्म यज्ञ

संध्योपासना ब्रह्मयज्ञ के अन्तर्गत आती है। इसके अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सभी प्रकार की उन्नति सन्निहित है। तन, मन और आत्मा की शुद्धि संध्या से सम्भव है। शरीर शुद्धि, मनः शुद्धि, व्यवहार शुद्धि, आत्म शुद्धि अर्थात् सर्वांगीण शुद्धि के लिए इसमें रूपरेखा मिलती है। इस सब के पश्चात् उपस्थान मंत्रों के द्वारा प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

इन्द्रिय स्पर्श मंत्र, मार्जन मंत्र आदि के द्वारा एक-एक इन्द्रियों का नाम लेकर उन्हें बलवान और यशस्वी बनाने की बात कही जाती है। इन्द्रिय का बलवान होना ही सब कुछ नहीं है, उसे यशस्वी भी होना चाहिए अर्थात् प्रत्येक इन्द्रियों से इस प्रकार का कार्य लिया जाए जिससे कि इन्द्रियों के स्वामी को यश प्राप्त हो। जब हम वाक्-वाक् कहते हैं तो परमात्मा से प्रार्थना भी करते हैं, स्वयं संकल्प भी करते हैं कि हमारी वाणी मृत्युपर्यंत सक्षम बनी रहे तो वहीं दूसरी ओर यह भी कि हम अपनी वाणी का जब भी प्रयोग करें इस प्रकार से प्रयोग करें कि वह दूसरे को सुनने में मृदु लगे, किसी को बुरा न लगे, साथ ही संभाषण जिन विषयों पर किया जाए वे विषय भी उदात्त हों। इसी प्रकार से अन्य इन्द्रियों के बारे में भी है। प्राणायाम मंत्र के साथ सूक्ष्म जगत् में प्रवेश करते हुए मन के दोषों को दूर करने का प्रयास होता है। **मनु महाराज ने कहा है कि प्राणायाम से प्राण के नियंत्रण होने से इन्द्रियों के दोष दूर हो जाते हैं और मन एकाग्र, बुद्धि निर्मल और आत्मा प्रकाशित होता है।** इस प्रकार से इन्द्रियों और मन के नियंत्रण के पश्चात् अघमर्षण मंत्र से पाप की भावना को समाप्त किया जाता है। महर्षि दयानन्द जी महाराज सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि पाप की भावना भी मन में उत्पन्न ना हो।

आगे मनसा परिक्रमा के अन्तर्गत सब दिशाओं में रक्षक के रूप में प्रभु की उपस्थिति को जान मन की चंचलता का

शमन होता है। अभय प्राप्त होने से आत्मा निश्चिन्त होकर के प्रभु के उपस्थान के लिए तैयार होता है, साथ ही इन छः मंत्रों के द्वारा छः बार प्रभु से प्रार्थना की जाती है कि हम जिससे द्वेष करते हैं अथवा जो हम से द्वेष करता हो वह सब हम प्रभु के न्याय पर छोड़ते हैं अर्थात् अपने को राग, द्वेष से दूर करने का प्रयास करते हुए इस सबसे बड़ी कठिनाई पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करें। उपस्थान के मंत्रों के द्वारा प्रभु के प्रति समर्पण का निश्चय किया जाता है। इस प्रकार से ब्रह्मयज्ञ प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है जिससे वह अपनी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है।

देव यज्ञ

देव यज्ञ के अन्तर्गत देव पूजा, दान और संगतिकरण आते हैं और इस प्रकार से यह व्यक्तिगत और सामाजिक उन्नति का एक महत्वपूर्ण सोपान बन जाता है। देव पूजा से यहाँ अभिप्राय विद्वानों का संग और उनसे विद्या प्राप्ति के माध्यम से अज्ञान निवारण प्रमुखता से है। धर्म कार्यों में अपनी आहुति देना निःसहाय की सेवा दान है और सामंजस्य पूर्वक एक दूसरे से व्यवहार संगतिकरण के अन्तर्गत है ।

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी लिखते हैं

'देवयज्ञ– विद्वानों का संग, सेवा, पवित्रता, दिव्य गुणों का धारण, दातृत्व, विद्या की उन्नति करना है।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती आगे लिखते हैं कि– 'अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यंत यज्ञ इसके अन्तर्गत आते हैं।' प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी भी जाति सम्प्रदाय का हो या किसी भी भूभाग में बसता हो अपने शरीर से मल–मूत्र आदि के माध्यम से प्रतिदिन दुर्गंध पैदा करता है। उसका परम कर्तव्य है कि वायुमण्डल को शुद्ध व प्रदूषण रहित और सुगन्धित रखने के लिए कम से कम उसने जितनी दुर्गंध फैलाई है उतनी तो सुगन्ध फैला ही दे। और वायु के शोधन का अग्निहोत्र के अतिरिक्त कोई तुल्य उपाय नहीं है अतः **प्रत्येक को प्रतिदिन अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए।**

ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं–

'अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का

श्वासास्पर्श, खान–पान से आरोग्य, बुद्धि बल, पराक्रम बढ़के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना।'

वे यह भी लिखते हैं-

'जो सन्ध्या–सन्ध्या काल में होम होता है, वह हुतद्रव्य प्रातःकाल तक वायुशुद्धि द्वारा सुखकारी होता है। जो अग्नि में प्रातः–प्रातः काल में होम किया जाता है, वह–वह हुतद्रव्य सायंकाल पर्यन्त वायु के शुद्धि द्वारा बल, बुद्धि और आरोग्यकारक होता है। इसीलिये दिन और रात्रि के सन्धि में अर्थात् सूर्योदय और अस्त समय में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिये।'

पितृयज्ञ

माता-पिता का हमारे ऊपर जो उपकार है उस ऋण को कभी चुकाया नहीं जा सकता। हमारे जीवन का निर्माण उन्हीं के द्वारा किया जाता है। हमें उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए वे नाना प्रकार के कष्टों को स्वयं वहन करते हैं। हमारा पेट भरने के लिए, हमारी आवश्यकता को पूरा करने के लिए न जाने अपनी किन-किन इच्छाओं को दमित करते हैं। अतः संसार के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि- **'अपने माता–पिता और आचार्य की तन–मन–धनादि उत्तम–उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा किया करें'**, ऐसा महर्षि दयानन्द का निर्देश है।

वह घर, घर नहीं शमशान तुल्य ही है जहाँ माता-पिता की आँखों में बच्चों के व्यवहार से आँसू आते हैं। व्यर्थ है ऐसी सन्तान का जीवन जो अपने माता-पिता को हर प्रकार से तृप्त ना करते हों।

'पितृयज्ञ' अर्थात् जिसमें देव जो विद्वान्, ऋषि जो पढ़ने-पढ़ानेहारे, पितर जो माता-पिता आदि वृद्ध, ज्ञानी और परमयोगियों की सेवा करनी। पितृयज्ञ के दो भेद हैं- एक 'श्राद्ध' और दूसरा 'तर्पण'। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है, **'श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्'** जिस क्रिया में सत्य का ग्रहण किया जाय, उसको 'श्रद्धा' और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय, उसका नाम 'श्राद्ध' है। और **'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्'** जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें, उसका नाम 'तर्पण'। परन्तु यह जीवतों के लिए है, मृतकों के लिये नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश)

महर्षि ने यह इस कारण से लिखा कि संसार में देखने में आता है कि जब तक माता-पिता जीवित होते हैं उनकी उपेक्षा करने वाले भी जब उनकी मृत्यु हो जाती है तो श्राद्ध और तर्पण के नाम पर अनेक प्रकार के कार्य करने को तत्पर रहते हैं। परन्तु इसका कोई महत्व नहीं है, महत्व तो जीवित माता-पिता की सेवा करना और उनको तृप्त करना है।

इसके लाभ के लिए स्वामी जी लिखते हैं-

पितृयज्ञ से जब माता-पिता और ज्ञानी-महात्माओं की सेवा करेगा, तब उसका ज्ञान बढ़ेगा उससे सत्यासत्य का निर्णय कर, सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करके सुखी रहेगा। दूसरा कृतज्ञता अर्थात् जैसी सेवा माता-पिता और आचार्य ने सन्तान और शिष्यों की की है, उसका बदला देना उचित ही है।

अतिथि यज्ञ

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो अर्थात् अकस्मात् धार्मिक, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमनेवाला, पूर्ण विद्वान्, परम योगी, संन्यासी गृहस्थ के यहाँ आवे तो उसको प्रथम पाद्य, अर्घ और आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर पश्चात् आसन पर सत्कारपूर्वक बिठाल कर खान-पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा-शुश्रूषा करके उनको प्रसन्न करे। पश्चात् सत्संग कर उनसे ज्ञान-विज्ञान आदि जिनसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होवे, ऐसे-ऐसे उपदेशों का श्रवण करे और अपना चाल-चलन भी उनके सदुपदेशानुसार रक्खे।

यहाँ प्रोत्साहन इस बात का है कि जो ज्ञानी और अनुभवी लोग हैं वे हमारे घरों में आवें, हम उनका सत्कार करें और उनसे ज्ञान प्राप्त करें और उनके सद् उपदेश पर चलकर अपने जीवन को प्रशस्त दिशा की ओर अग्रसर करें। इस प्रकार से इस यज्ञ के द्वारा समाज में एक सुव्यवस्था स्थापित करना ही उद्देश्य नहीं है वरन् स्वयं की उन्नति भी इसमें सन्निहित है। **इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन यह यज्ञ करना चाहिए।**

वैश्वदेव यज्ञ

यह भी प्रतिदिन का एक आवश्यक कर्तव्य है। प्रभु ने हमें मानव का शरीर दिया है। सबकी भलाई करना, सबका उपकार करना हमारा कर्तव्य है। **अन्य जो चार यज्ञ हैं उनका सम्बन्ध स्वयं से अथवा मनुष्य जाति के अन्य सदस्यों से है और पर्यावरण से है परन्तु वैश्वदेव यज्ञ का सम्बन्ध मानवेतर प्राणियों से है।** यहाँ जोर इस बात पर है कि हमारा ध्यान, हमारी उदारता का केन्द्र केवल मनुष्य समाज का सदस्य ही ना हो वरन् मानवेतर प्राणियों का भी हम उसी प्रकार से ध्यान रखें। इसीलिए यहाँ विधान किया गया है कि प्रतिदिन गाय, कुत्ता, कौवा आदि जो प्राणी हैं उनके लिए भी हम अन्नदान करें और अगर वे कष्ट में हैं तो उनके कष्ट को दूर करने का भी प्रयास करें।

इस प्रकार से **यह पाँचों यज्ञ पूरे विश्व के कल्याण की भावना से ओतप्रोत हैं। इसलिए विश्व के प्रत्येक मनुष्य को ये यज्ञ अथवा कार्य प्रतिदिन सम्पादित करने चाहिए।** इसीलिए इनको केवल यज्ञ न कहकर महायज्ञ की संज्ञा दी गई है ।

फाइबर रेजिन के पाँच चित्र अत्यन्त सुन्दर शिल्प (म्यूरल आर्ट) के माध्यम से 'मधु-हरि प्रेरणा कक्ष' में प्रदर्शित करके उक्त शिक्षा प्रत्येक आने वाले पर्यटक/विद्यार्थी को दी जाती है। हम आशा करते हैं कि कुछ ना कुछ भद्र भावना आने वाले आगंतुकों को स्पर्श कर सकेगी।

वैदिक शिक्षाओं के अग्रप्रसारण हेतु निर्मित इस नवीन और अद्भुत रूप से सफल प्रयोग को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। आपको ज्ञात ही है कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। यह सदैव गतिशील रहे, अपने प्रभाव क्षेत्र में दिन प्रतिदिन वृद्धि करते हुए आर्य समाज के सन्देश को विश्वभर के लोगों के मध्य प्रसारित करता रहे, इसके लिए केवल एक छोटी सी प्रार्थना स्वीकार करने का अनुरोध है।

सत्यार्थमित्र बनें

और न्यास को एक वर्ष में मात्र 5100 रुपए के सहयोग का संकल्प कर सहयोग प्रदान करें।

निवेदक : अशोक आर्य (अध्यक्ष न्यास)

आगामी योजनाएँ

इतिहास का सृजन उदार दाताओं के हाथ में

१. वेदवृक्ष

NMCC के अंदरूनी चौक में एक भव्य वृक्ष बनाकर उस पर विभिन्न वेद–वेदांग का अलग–अलग डालियों पर रोशनी से जगमग करते हुए प्रदर्शन, जिससे कि पर्यटकों को एक नजर में वेद, उपवेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन, उपनिषद् आदि सब का ज्ञान हो सके।

(अनुमानित व्यय ५ लाख रुपये)

२. महर्षि दयानन्द जीवन यात्रा दर्शन

महर्षि दयानन्द जी महाराज का जन्म टंकारा में हुआ और बोध होने के पश्चात् लगभग २२ वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृह त्याग कर दिया। उसके बाद मृत्युपर्यन्त वह कहाँ–कहाँ गए, उसको दिग्दर्शित करते हुए एक मानचित्र न्यास में बनाया गया है, जिसे अभी तक एक दीवाल पर प्रदर्शित किया जा रहा था। परन्तु अब वहाँ पर राष्ट्र नायक वीथिका बनाई जा चुकी है, अतः दायीं ओर जो गार्डन है, उसको ऊपर से बहुत सुन्दरता के साथ आच्छादित कर, नीचे दयानन्द जीवन यात्रा को दिखाने की योजना है जिसमें छोटी–छोटी एलईडी लाइट से चलते हुए क्रम में बड़े स्पष्ट तरीके से दर्शक को यह पता चल सकता है कि महर्षि जी अपने जीवन में कहाँ–कहाँ गए।

(अनुमानित व्यय ५ लाख रुपये)

३. NMCC दर्शन वाहन

प्रारम्भ से ही यह विचार रहा है कि भारतीय संस्कृति के उन उदात्त तत्वों को, जिनको कि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र में विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया है, विद्यार्थियों तक पहुँचाने का सर्वाधिक प्रयास करना चाहिए। इस उद्देश्य से विद्यालयों से सम्पर्क करने पर यह स्पष्ट सामने आया कि केवल कुछ विद्यालय जो कि समृद्ध हैं उनके पास अपने वाहन हैं परन्तु जितने भी सरकारी विद्यालय हैं उनके पास ऐसी कोई सुविधा नहीं है, अतः इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए न्यास के पास अपना एक बड़ा वाहन जो कि ३० या ४० सीटर हो, वह आवश्यक है। जिससे कि एक दिन में विद्यार्थियों के २–३ समूह यहाँ लाए जाएँ और यह सब दिखाकर के विद्यार्थियों को वापस छोड़ा जाए। आशा ही नहीं विश्वास है कि अगर ऐसा वाहन केन्द्र के पास होता है तो निश्चित रूप से १५०–२०० विद्यार्थी प्रतिदिन यहाँ आके भारतीय संस्कृति का पाठ पढ़ सकेंगे। यह वाहन इलेक्ट्रिक भी हो सकता है। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि कोई न कोई उदारमना भामाशाह यह साधन केन्द्र को उपलब्ध कराने के लिए आगे आकर इतिहास का सृजन करेंगे।

(अनुमानित व्यय २५ से ३० लाख रुपये)

४. गोल्फ कार्ट के प्रकार का वाहन

गुलाब बाग के अन्दर वायु प्रदूषण के कारण पेट्रोल/डीजल के वाहन स्वीकृत नहीं है। अतः तब बड़ी दुविधा पैदा हो जाती है जब कोई सीनियर सिटीजन केन्द्र को देखने आता है और इस कारण से उसे वापस जाना पड़ता है। जब आर्य बन्धु अतिथि के रूप में आते हैं तो यही समस्या उत्पन्न होती है। उनके वाहन बाहर छोड़ने पड़ते हैं, उन्हें सामान अन्दर लाने में अत्यन्त कठिनाई होती है। अतः विचार यह है कि एक इलेक्ट्रिक का छोटा सा वाहन अगर हो तो ऐसे सीनियर सिटीजन जो नवलखा महल का अवलोकन करना चाहते हैं परन्तु वाहन अन्दर ले जाने की अनुमति न होने से वह आ नहीं पाते, उनको उक्तवाहन की सुविधा उपलब्ध कराए जाने पर ऐसे सारे वृद्ध सज्जन और माताएँ सुविधा से केन्द्र तक आ सकेंगे। इसके लिए भी दानी महामनाओं से निवेदन रहेगा कि इस दिशा में अपनी उदारता दिखाने का श्रम करें।

(अनुमानित व्यय ६ लाख रुपये)

५. यज्ञशाला का भव्य द्वार

अब क्योंकि नवलखा महल का पूरा बाह्य दृश्य पत्थर से निर्मित हो गया है, आवश्यक प्रतीत होता है कि यज्ञशाला का जो बाहरी गेट है वह भी इस सब से मैच करता हुआ भव्य बनाया जाए। जिसमें अनुमानित १५०००००० (पन्द्रह लाख) रुपए का व्यय है। इसे हेतु भी प्रार्थना है कि उदार सज्जन सहयोग प्रदान करें।

६. पुस्तकालय

न्यास में एक अत्यन्त समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें लगभग १४००० पुस्तकें हैं। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् (स्मृतिशेष) पण्डित मदन मोहन जी विद्यासागर का पुस्तकालय भी सम्मिलित है, जिसे कि उनके निधन के पश्चात् पूज्या माताजी ने न्यास को उपलब्ध कराया। परन्तु इसकी स्थिति यह है कि किसी लाइब्रेरियन को नियुक्तन कर पाने के कारण अभी हम यही कह सकते हैं कि पुस्तकें सुरक्षित हैं परन्तु उनका उपयोग उचित प्रकार से नहीं हो पा रहा है।

पुस्तकालय के सन्दर्भ में दो बिन्दु हैं। प्रथम तो इसको इतना सुन्दर व दर्शनीय बनाना कि लोग पुस्तकालय देखकर ही और उसमें रखे हुए अलभ्य ग्रन्थों को देखकर प्रसन्नता का अनुभव करें।

दूसरे यह सब होने के बाद संसाधनों के आधार पर सम्भव हो तो लाइब्रेरियन की नियुक्तिकी जाए और एक शोध पुस्तकालय के रूप में इसकी सेवाएँ शोधार्थियों को और स्वाध्यायशील जनों को प्राप्त हो। इस सब में अनुमानित रूप से ₹५०००००० (पाँच लाख) का व्यय है।

७. महर्षि दयानन्द शयनकक्ष

सत्यार्थ प्रकाश भवन के प्रथम तल पर वह कक्ष अवस्थित है जिसका उपयोग महर्षि दयानन्द शयन कक्ष के रूप में करते थे। अनेक बार, विशेष रूप से आर्यजनों की अभिलाषा होती है कि उस कक्ष के दर्शन करें। परन्तु जिस प्रकार बीच के समय में उस कक्ष के आगे बिना किसी योजना के कुछ निर्माण राज्य सरकार के समय में कर दिए थे, उस कारण से अनाकर्षक परिवेश में वहां किसी श्रद्धालु को ले जाना समुचित नहीं है। उस कक्ष तक जाने के लिए जो गलियारा बनाने की योजना मस्तिष्क में है उस पर न्यूनतम २५०००००० (पच्चीस लाख) रुपए का अनुमानित व्यय है। आर्य श्रेष्ठि अगर इस ओर ध्यान देकर उदार सहयोग प्रदान करेंगे तो यह एक अत्यन्त श्रद्धा तथा भावना से ओतप्रोत प्रकल्प तैयार हो सकेगा।

८. अन्य (अ) संस्कार वीथिका में यद्यपि सभी संस्कारों का २१ मिनट का ऑडियो भी साथ में है, परन्तु अनेक दर्शक कहते हैं कि इतना समय उनके पास नहीं है, अतः हमारे गाइड उनको बिना ऑडियो चलाएँ सभी संस्कारों को कुछ देर में समझा देते हैं। परन्तु यह सुझाव भी आए हैं कि प्रत्येक संस्कार के समक्ष उनका संक्षिप्त वर्णन हिन्दी और अंग्रेजी में रहे तो दर्शक स्वयं पढ़कर उसे समझ सकेंगे।

(ब) भविष्य में बच्चों के लिए अधिक रुचि पैदा करने के लिए विचार है कि अन्दर जो कुछ भी जानकारी उन्हें दी गई है उस आधार पर कम्प्यूटराइज्ड बहुविकल्पीय प्रश्न उन्हें दिए जाएँ और वह जितना सही हल कर दें उस हिसाब से ऑटोमेटिक स्लिप कार्ड उनको मशीन में से मिल जाएँ और तदानुरूप उनको छोटे–छोटे पुरस्कार दिए जाएँ। इससे बच्चों को देखे गए ज्ञान को स्मृति पटल पर रखने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होगा। ऐसी छोटी–छोटी अन्य योजनाएँ भी हैं जो पाँच से सात लाख में पूर्ण हो जाएंगी।

ऊपर जो योजनाएँ हमने श्रीमन्त लोगों के समक्ष रखी हैं, उनके पूर्ण होने पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का आकर्षण और उपयोगिता कई गुना बढ़ जाएगी।

हम आगामी योजनाएँ आपके समक्ष तभी रख रहे हैं जब कुछ योजनाएँ हमने धरातल पर उतारकर के उनकी उपयोगिता को सिद्ध किया है। दान माँगना तभी उचित प्रतीत होता है जब आप दानदाता के समक्ष यह सिद्ध कर सकें कि आप पारदर्शी प्रकार से उनके द्वारा दिए गए धन को सत्कार्य में लगाने और उसे पूर्ण करने में सक्षम हैं, इसीलिए हमें आशा भी है कि आर्य श्रेष्ठीगण अपने दिलों के दरवाजे खोलेंगे और ऊपर जो योजनाएँ बतायी गयी हैं उनको पूर्ण करने हेतु उत्साह के साथ आगे आएँगे। कहना ना होगा कि दानदाताओं का नाम तथा इसका उल्लेख उचित प्रकार से उचित स्थान पर किया जाएगा इस सब निवेदन के पश्चात् अत्यन्त आशा और विश्वास के साथ हम अपने प्रार्थना करने के क्रम को यहीं विराम देते हैं।

Festive Greetings
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
CARRY ON MISSY
CAPRI
CHURIDAR
ANKLE LENGTH
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

'प्रजा' उसको कहते हैं कि जो पवित्र गुण, कर्म, स्वभाव को धारण कर के पक्षपातरहित न्यायधर्म के सेवन से, राजा और प्रजा की उन्नति चाहती हुई, राजविद्रोहरहित राजा के साथ पुत्रवत् वर्त्ते।

सत्यार्थ प्रकाश स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः पृष्ठ ५८८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख	प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख	प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर